राजस्थान वानिकी एवं जैव विविधता परियोजना (फेज–2)

JICA द्वारा ऋण एवं राज्य सरकार की वित्तीय सहायता से संचालित

संवाद पत्र

अंक - 3 जुलाई से सितम्बर 2016

67 वां राज्य स्तरीय वन महोत्सव

राज्य स्तरीय वन महोत्सव के अवसर पर उपस्थित जन समूह को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे

67वां राज्य स्तरीय वन महोत्सव 21 जुलाई 2016 को झालावाड़ जिले की असनावर तहसील के रूपपुरा बालदिया गांव के चारागाह में मुख्यमंत्री जल स्वावलम्बन अभियान स्थल पर मनाया गया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे ने पीपल, बरगद, बिल्वपत्र, आंवला तथा अशोक के पांच फीट से ऊंचे पौधे रोपित कर पंचवटी की स्थापना की। मुख्यमंत्री ने वन विभाग के अधिकारियों को इन पेड़ों के बीच एक झौपड़ी बनवाकर इसे आदर्श पंचवटी बनाने के लिए कहा।

आयोजन स्थल पर उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए माननीया मुख्यमंत्री ने पेड़ों के लिए प्रणों का बलिदान और पेड़ों का धार्मिक महत्व की याद दिलायी। उन्होंने कहा कि राजस्थान में पेड़ों को बचाने के लिए सिर कटवाने से भी पीछे नहीं हटने की परंपरा रही है। अमृता देवी ने खेजड़ी वृक्ष की रक्षा के लिए अपना सिर कटवा दिया। आज पूरा राजस्थान अमृता देवी को याद करता है। मुख्यमंत्री ने अग्नि पुराण का श्लोक बताते हुए कहा कि 10 कुएं खुदवाने से जितना पुण्य मिलता है, उतना पुण्य 1 बावड़ी बनाने से मिलता है। 10 बावड़ी बनाने जितना पुण्य 1 तालाब बनाने से मिलता है। 10 तालाब बनाने के बराबर पुण्य 1 कन्या का विवाह करने से मिलता है तथा 10 कन्याओं के विवाह करने जितना पुण्य एक पेड़ लगाने से मिलता है। मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे ने कहा कि वन विभाग इस बार पूरे राज्य में 61 हजार हैक्टेयर भूमि पर

परियोजना निदेशक की कलम से ...

चालू वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही में लगभग सम्पूर्ण परियोजना क्षेत्र में मानसून की अच्छी बारिश ने वृक्षारोपण गतिविधियों को गति प्रदान की तथा सितम्बर 2016 के अंत तक वर्ष के निर्धारित लक्ष्य को 96 प्रतिशत प्राप्त कर लिया गया। साथ ही परियोजना में निर्धारित कुल 83650 हैक्टेयर के वृक्षारोपण के लक्ष्य में से 77046 हैक्टेयर में वृक्षारोपण कार्य पूर्ण कर लिया गया है। हाल ही में जायका द्वारा कराई गई इम्पेक्ट असिस्मेन्ट स्टडी में भी परियोजना अंतर्गत किये गये वृक्षारोपण की जीविता प्रतिशत 75 से 89 प्रतिशत पाई गई जो काफी उत्साहजनक है।

परियोजना के एक अन्य महत्वपूर्ण घटक जल संरक्षण संरचनाओं के निर्माण के अंतर्गत ऐनीकट के निर्माण में भी प्रगति हुई है तथा टैक्निकल अप्रूवल कमेटी द्वारा 741 प्रस्तावों में से 225 प्रस्तावों को निर्माण के लिए अनुमोदन प्रदान कर दिया गया है। बाकी प्रस्तावों का अनुमोदन भी शीघ्र अपेक्षित है।

आशा करता हूं कि आगामी महीनों में हम कार्य करने की गति को बनाये रखेंगे तथा निर्धारित लक्ष्यों को सुगमता से प्राप्त कर सकेंगे।

— **आर. के. गोयल** आई.एफ.एस
परियोजना निदेशक

ढाई करोड़ पौधे लगा रहा है तथा राज्य स्तरीय वन महोत्सव के दौरान पूरे राज्य में कम से कम 25 लाख पौधे लगाने का कार्यक्रम है। उन्होंने राज्य की जनता से आह्वान किया कि प्रत्येक व्यक्ति इस वर्ष कम से कम पांच पेड़ लगाए तथा संतान की तरह उसकी रक्षा करे ताकि राजस्थान हरा–भरा बने तथा राज्य में पानी की कोई कमी न हो।

राज्य स्तरीय वन महोत्सव के दौरान विभाग द्वारा एक प्रदर्शनी भी लगाई गई जिसमें विभाग की विभिन्न उपलब्धियों को दर्शाया गया। साथ ही विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत गठित स्वयं सहायता समूहों द्वारा बनाये गये उत्पादों को भी प्रदर्शित किया गया। मुख्यमंत्री ने विभिन्न स्वयं सहायता समूहों की महिला सदस्यों से बातचीत कर उनके कार्य के बारे में जानकारी प्राप्त की। उन्होंने समूहों द्वारा उत्पादित वस्तुओं की खरीद भी की।

वन विभाग द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे

स्वयं सहायता समूहों द्वारा उत्पादित वस्तुओं के बारे में जानकारी लेते हुए मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे

प्रदर्शनी के दौरान राजस्थान वानिकी एवं जैव विविधता परियोजना – 2 के अन्तर्गत प्रदेश के अनेकों जिलों में संचालित स्वयं सहायता समूहों द्वारा निर्मित उत्पाद जैसे – मार्बल शिल्प, कैर–सांगरी, हल्दी, कशीदाकारी, लाख चुड़ी, कपड़ा बैग, रली हस्तकला, हस्तकला, मिट्टी बर्तन दस्तकारी, दरी बुनाई आदि का प्रदर्शन किया गया।

इस अवसर पर अतिरिक्त मुख्य सचिव वन एवं पर्यावरण एन.सी. गोयल, प्रधान मुख्य वन संरक्षक (हॉफ) डॉ. एस.एस. चौधरी, वन विभाग के अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे।

जल संरक्षण संरचनाओं का निर्माण

जल संरक्षण संरचनाओं का निर्माण परियोजना का एक महत्वपूर्ण घटक है। इसके अन्तर्गत विभिन्न क्षेत्रों में जरूरत के अनुसार उपयुक्त जल संरक्षण संरचना के निर्माण का प्रावधान है – जैसे एनीकट, कॉन्टूर बुन्डिंग, चेक डैम, पेरकोलशन टैंक, गेबिन स्ट्रक्चर, पारंपरिक जल संरक्षण संरचनाओं का उद्धार, आदि। इस घटक में शामिल सभी गतिविधियों में संतोषजनक प्रगति आ रही थी सिवाय एनीकट के निर्माण की। न्यायलय द्वारा एनीकट की निर्माण पर रोक लगा दी गई थी। गत वर्ष दुबारा दिशा निर्देश जारी किये गए जिसके अनुसार एक निश्चित ऊंचाई के एनीकट का निर्माण टेक्निकल अप्रूवल कमेटी से अनुमोदन प्राप्त कर किया जा सकता है।

इस दिशा निर्देश के बाद सभी मण्डलों से एनीकट निर्माण के प्रस्ताव अनुमोदन के लिए टेक्निकल अप्रूवल कमेटी के पास भेजे गए तथा कुल 741 प्रस्तावों में से 225 प्रस्तावों का अनुमोदन प्राप्त हो चुका है। अन्य प्रस्तावों का अनुमोदन भी शीघ्र अपेक्षित है।

मुख्यमंत्री जल स्वावलम्बन अभियान के तहत भी विभिन्न मंडलों में जल संरक्षण संरचनायों का निर्माण किया जा रहा है।

ऐनीकट – ।।, आबू रोड़

पारंपरिक जल संरक्षण संरचनाओं का उद्धार, सीकर

प्रवेश बिन्दु गतिविधियां

प्रवेश बिन्दु गतिवधि – सार्वजनिक शौचालय, पाली

सामुदायिक सभा कक्ष, छत्तरगढ़

वानिकी परियोजनाओं का एक वांछनीय उद्देश्य स्थानीय समुदायों की भागीदारी है, परंतु अक्सर इस उद्देश्य की प्राप्ति में अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इसका एक मुख्य कारण है कि वानिकी परियोजनाएं लंबी अवधि की होती हैं और उन्हें स्थानीय लोग प्राथमिकता नहीं देते। दूसरे इन परियोजनाओं को सरकारी कार्यक्रमों के रूप में देखा जाता है जहाँ इसके क्रियान्वयन तथा संरक्षण की जिम्मेदारी वन विभाग की मानी जाती है। अक्सर इन परियोजनायों में गतिविधियों के लिए चिन्हित क्षेत्र को कुछ समय के लिए 'बंद' करना पड़ जाता है जिससे इस क्षेत्र से मिलने वाले वन उत्पादों पर रोक लग जाती है जो स्थानीय समुदाय को अप्रिय लगती है क्योंकि इन उत्पादों पर वे अपना अधिकार समझते हैं।

वानिकी परियोजनाओं की सफलता एवं वृक्षारोपण के संरक्षण के लिए लगभग सभी हितधारकों का सहयोग जरूरी है । प्रवेश बिन्दु गतिविधियों के द्वारा परियोजना का प्रचार – प्रसार एवं सभी हितधारकों का सहयोग सुनिश्चित किया जा सकता है। प्रवेश बिन्दु गतिविधियों का मुख्य उद्देश्य सभी हितधारकों की भागीदारी तथा क्षेत्र के विकास के लिए जरूरी कार्यों का क्रियान्वयन सुनिश्चित करना है। इसके लिए जरूरी है की प्रवेश बिन्दु गतिविधि के चयन के समय सभी कि भागीदारी हो तथा ऐसी सामुदायिक परिसम्पतियों का निर्माण हो जिससे सभी को लाभ मिले।

DMU	No of VFPMC	No of EPA Activites Undertaken
IGNP, Jaisalmer	48	68
DDP, Jaisalmer	24	42
Jodhpur	22	30
Pali	30	82
Barmer	24	34
Sirohi	25	63
Jalore	29	41
Chhattargarh	23	35
IGNP, Bikaner	40	89
DDP, Bikaner	32	54
Churu	24	63
Jaipur (North)	47	106
Jaipur (South)	30	54
Sikar	30	60
Jhunjhunu	12	32
Nagaur	25	54
Bhilwara	32	142
Banswara	53	138
Dungarpur	38	39
WL, Rajsamand	21	44
WL, Chittorgarh	15	53
WL, Udaipur	11	27
WL, Mt. Abu	6	11
WL, Jodhpur	1	14
DNP, Jaisalmer	2	1
WL, Karoli	5	11
WL, Jaipur Zoo	1	4
Grand Total	**650**	**1391**

मण्डल प्रबंधन इकाईवार किये गये प्रवेश बिन्दु कार्य

राजस्थान वानिकी एवं जैव विविधता परियोजना – फेज 2 में प्रवेश बिन्दु गतिविधियों के लिए प्रत्येक गांव में अधिकतम 4 लाख रूपये का प्रावधान है जिसे समिति के गठन के बाद पहले दो वर्षों में 2–2 लाख रूपये के हिसाब से आवंटित किया जाता है। परियोजना में अब तक अनेक सराहनीय कार्य प्रवेश बिन्दु गतिविधियों के अन्तर्गत किये जा चुके हैं जैसे टीनशेड निर्माण, चबूतरा निर्माण, सोलर लाईट, शौचालय निर्माण, सामुदायिक भवन निर्माण, खैली निर्माण, टांका निर्माण, दीवार निर्माण, विश्राम गृह निर्माण, तालाब का नवीनीकरण, टैंक निर्माण, जल कुण्ड निर्माण, चौपाल निर्माण, खरनजा निर्माण, नाड़ी निर्माण, सभागार निर्माण, नलकूल निर्माण, आरसीसी मंदिर, सीसी रोड़ निर्माण, बजरी सड़क निर्माण, यात्री प्रतिक्षालय निर्माण, रपट निर्माण आदि।

शैक्षणिक भ्रमण - गुजरात

अन्य राज्यों में क्रियान्वित परियोजनाओं का अध्ययन

चालू वित्त वर्ष 2016–17 में अब तक 4 एक्सपोजर विजिट्स (शैक्षणिक भ्रमण) का आयोजन किया जा चुका है। इनमें से दो विजिट्स में विभिन्न मण्डलों से सहायक वन संरक्षक/क्षेत्रीय वन अधिकारी कर्नाटक एवं पश्चिम बंगाल की यात्रा पर गये तथा बाकी दो विजिट्स में ग्राम्य वन सुरक्षा प्रबंध समिति/पारिथितिकी विकास समिति के सदस्य उत्तर प्रदेश एवं गुजरात में क्रियान्वित वानिकी परियोजनाओं के अध्ययन के लिए गये। इन शैक्षणिक भ्रमण कार्यक्रमों के आयोजन का मुख्य उद्देश्य अन्य राज्यों में क्रियान्वित वानिकी परियोजनाओं की गतिविधियों के बारे में जानकारी तथा वहां की बेस्ट प्रेक्टिसेज का अध्ययन करना था, जिन्हें भविष्य में अपने यहां अपना जा सके।

गुजरात शैक्षणिक भ्रमणः राजस्थान के 15 वनमण्डलों से आये ग्राम्य वन सुरक्षा प्रबंध समिति/पारिथितिकी विकास समिति/स्वयं सहायता समूह एवं एनजीओ के 35 सदस्यों सहित कुल 39 सदस्य 26 सितम्बर 2016 को गुजरात के लिये रवाना हुए। भ्रमण के दौरान गुजरात राज्य के 8 वनमण्डलों का भ्रमण किया। 8 वनमण्डलों के अधीन विभिन्न वन क्षेत्रों, वन्यजीवों, अभयारण्यों, नर्सरियों, रेसक्यू सेंटर, ईको ट्यूरिज्म साइटों आदि का भ्रमण एवं अवलोकन किया। भ्रमण के दौरान जेएफएमसी, ईडीसी, एसएचजी एवं वन विभाग के गुजरात के क्षेत्रीय वन अधिकारी, सहायक वन संरक्षक, उप वन संरक्षक एवं मुख्य वन संरक्षक बडौदा स्तर के अधिकारियों के साथ बैठक की। भ्रमण दल द्वारा जिन क्षेत्रों, वनमण्डलों का भ्रमण किया गया वहां भ्रमण के दौरान पाया कि वहां के लोगों में वन क्षेत्र पर निर्भरता बिल्कुल नहीं के बराबर है, लेकिन वे लोग वन विभाग पर पूरी तरह से निर्भर है। उक्त क्षेत्र में लोग वनों की सुरक्षा एवं विकास के प्रति पूरी तरह सावचेत होकर वन विभाग को पूरा सहयोग देते हैं। वन क्षेत्रों में सुरक्षा एवं विकास के लिए गांव स्तर पर टास्क फोर्स, फायर कन्ट्रोल फोर्स, पेट्रोलिंग फोर्स आदि बनाकर सुरक्षा कार्य को अंजाम दिया जाता है।

भ्रमण के दौरान पाया कि उक्त क्षेत्रों में वन क्षेत्रों में मवेशी चराना ग्रामीण स्तर से ही पूर्ण रूप से प्रतिबंधित है। वन विभाग के आम लोगों का गहरा जुड़ाव होकर वनों पर निर्भरता शुन्य हो इसके लिए वन विभाग द्वारा अधिक से अधिक स्वयं सहायता समूह का गठन कर उनके आय के स्त्रोत बढ़ाने के लिए आय सृजित गतिविधियां सचालित की जा रही है। साथ ही ग्रामीणों की प्रत्येक निजी या सार्वजनिक आवश्यकताओं की पूति हेतु स्थानीय वन विभाग सतत् प्रयासरत है। जिन क्षेत्रों का भ्रमण किया गया वहां के ग्रामीणों से बात करने पर पाया कि यहां समितियों/समूहों की नियमित बैठकें आयोजित की जाती हे। इनमें वन विभाग के अलवा भी निजी व सार्वजनिक चर्चा के साथ–साथ अन्य विभागों की योजनाओं आदि पर भी चर्चा की जाती है। इस कार्य के लिए यहां जमीनी स्तर पर क्षमता सर्वद्धन एवं आजीविका वर्धन टीम को नियुक्त किया गया है जो कि ग्रामीणों एवं वन विभाग तथा अन्य विभागों के बीच सामंजस्य का कार्य करते हें तथा सरकार की योजनाओं एवं सुविधाओं को वन विभाग के माध्यम से आमजन तक पहुंचाने का प्रयास करते हैं।

सफलता की कहानियाँ

डेयरी विकास खुशहाली का काम

मण्डल प्रबन्धन इकाई, नागौर की रेंज परबतसर के ग्राम बंवाल में ग्राम्य वन सुरक्षा एवं प्रबन्ध समिति, विभाग एवं कार्यरत गैर सरकारी संस्था के सहयोग से 29 अगस्त 2014 को जय भवानी स्वयं सहायता समूह का गठन किया गया। इस समूह में 01 एससी एवं 09 अन्य कुल 10 पुरूष सदस्य शामिल हुये। यह लोग खेती और पशुपालन कार्य से जुड़े हुऐ थे। पशुपालन में भैस, बकरी, गाय का पालन करते है। साथ–साथ कम पानी एवं सीमित साधनों का उपयोग कर थोड़ी – थोड़ी खेती किया करते थे। वर्तमान परिवेश में सिमित ससांधनो से केवल खेती पर निर्भर होकर जीवीकोर्पाजन किया जाना मुश्किल हो रहा था परन्तु इन लोगों के पास अन्य कोई विकल्प भी नही था।

समूह के कुछ सदस्यों ने सुना कि गांव में जायका के सहयोग से वन विकास की एक परियोजना प्रारम्भ हुई है। जिसमें वन विकास के साथ साथ आजिविका उपार्जन हेतु गरीबी उन्मुलन के कार्य भी किये जाने है। वनीकरण के साथ–साथ समूहो का गठन कर रोजगार से जोड़ा जायेगा। इन खेतीहर कामगारो ने मिलकर अपने स्वयं का एक जय भवानी माँ के नाम से स्वयं सहायता समूह का गठन किया। डेयरी बूथ खोलकर समूह के सदस्य एवं गांव वालो से दूध संकलित कर अजमेर सरस डेयरी को देने की कार्य योजना संस्था के माध्यम से लगातार हो रही समूहो कि बैठको में विचार–विमर्श के बाद तैयार की गई।

परियोजना अंतर्गत इस समूह ने वितीय वर्ष 2014–15 में वन सुरक्षा एवं प्रबन्धन समिति बंवाल से दुग्ध संकलन हेतु कैन एवं फेट जांच की मशीन क्रय करने हेतु 50000/– का रिवोल्विगं फंड प्राप्त किया। समूह के समस्त सद्स्यों एवं अन्य गांव वाले पूर्व में दूध का स्थानीय एवं ग्रामीण क्षैत्र में बिना फैट जांच किये आने पोने दामो में सस्ता बेच रहे थे। समूह से जुडकर जिसकी जितनी फेट उसको उतना पैसा के हिसाब से गांव वालों की आमदनी से लोगों का पशुपालन की ओर रूझान बढ़ने लगा। समूह के प्रत्येक सदस्य को अपने दुध का सही भाव मिलने लग गया एवं दुग्ध संकल्न से प्रति माह प्रति सदस्य को 3000 से 3500 की अतिरिक्त आय प्राप्त होने लगी।

समूह के सदस्यों ने एक राय से नियमित प्रतिमाह बचत 1000 रूपये रखी जो भैस एवं गाय खरीदने हेतु आवश्यक होने पर उचित ब्याज दर पर समूह के सदस्यों में आपस में वितरित की जाती है जिसका समूह प्रति माह होने वाली बैठक में पूर्ण रिकार्ड रखा जाता है। दिनांक 31 जनवरी 2016 तक समूह में बचत का वितरण के उपरान्त 94500/– की कुल बचत बैंक खाते में जमा थी।

सफलता की कहानियाँ

पारम्परिक 'रल्ली' के निर्माण से आजीविका अर्जन

मंडल प्रबंधन इकाई इगानप स्टेज–।। जैसलमेर के अन्तर्गत गांव परुराम भील की ढाणी में **रामदेव स्वयं सहायता समूह** का गठन वन विभाग एवं क्षेत्र में कार्यरत स्वयं सेवी संस्था, मानव प्रगति संस्थान द्वारा माह नवम्बर 2013 में किया गया। इस समूह में कुल 10 महिलाएं हैं। इस क्षेत्र में परियोजना का क्रियान्वयन शुरू होने के पहले यह सभी महिलाएं पारम्परिक तौर तरीकों के अनुसार जीवन यापन करती थीं और इनका आय का कोई स्त्रोत नहीं था। परियोजना के प्रचार प्रसार एवं जन जागरूकता के कार्यक्रमों द्वारा यहाँ पर जागरूकता बढ़ी तथा लोगों ने आय के नए–नए विकल्पों की तरफ ध्यान देना शुरू किया।

रामदेव स्वयं सहायता समूह की महिलाओं ने समूह के गठन के बाद पँच सूत्र का पालन करते हुए नियमित बैठके, नियमित बचत एवं आपसी लेन देन की शुरुआत की। कुछ समय बाद स्वयं सेवी संस्था की मदद से समूह ने राष्ट्रीय कृत बैंक में अपना बचत खाता खोला। आपसी विचार विमर्श के बाद समूह की महिलाओं ने पारम्परिक रल्ली का उत्पादन करने का निर्णय किया। यह एक ऐसी पारम्परिक कला / कार्य है जिसमें इस क्षेत्र की महिलाएं निपुण थी। आय सृजन गतिविधि शुरू करने के लिए परियोजना की तरफ से 50000 रूपये का ऋण समूह को दिया गया।

रामदेव समूह की महिलाओं ने पारम्परिक डिजाईन में बाजार की मांग अनुसार रल्ली का निर्माण कार्य शुरू किया। तैयार माल को स्थानीय बाजार, व्यापारियों एवं प्रदर्शनी में भाग लेकर बेचने की प्रक्रिया शुरू की गई। सभी जगह तैयार माल को सराहा गया। जैसलमेर में आयोजित एक प्रदर्शनी में समूह ने एक ही दिन में करीब 18750 रूपये का उत्पाद बेचा। वर्तमान में समूह की महिलाएं हर महीने औसतन 3000–3500 रूपये की कमाई कर रही हैं।

इसी तरह से गांव हाकिम की ढाणी में **शरीफा स्वयं सहायता समूह** का गठन माह नवम्बर 2015 में किया गया। इस समूह में भी 10 महिलाएं हैं जिनकी आय का कोई स्त्रोत नहीं था।

शरीफा स्वयं सहायता समूह की महिलायों ने भी समूह के गठन के बाद नियमित बैठकें, नियमित बचत एवं आपसी लेन देन की शुरुआत करी तथा बहुत जल्दी अपना बचत खाता खुलवा लिया।

शरीफा समूह की महिलाओं ने भी स्थानीय संसाधनों की उपलब्धि एवं परम्परागत कौशल को ध्यान में रखते हुए रल्ली का निर्माण कार्य शुरू किया। परम्परिक एवं सम सामयिक कला के मिश्रण से तैयार माल को स्थानीय व्यापारियों एवं प्रदर्शनी में स्टाल लगा कर बेचा गया। वर्तमान में समूह की महिलाएं प्रति माह औसतन 3000 –3200 रूपये की कमाई कर रही हैं।

समीक्षा बैठक, कार्यशाला एवं सेमिनार में परियोजना का प्रतिनिधित्व

गत तिमाही में JICA द्वारा विभिन्न समीक्षा बैठक, कार्यशाला एवं सेमिनार का आयोजन किया गया।

- माह अगस्त 2016 में JICA द्वारा वित्त पोषित परियोजनाओं की दिल्ली में समीक्षा बैठक आयोजित की गई जिसमें परियोजना निदेशक श्री आर के गोयल एवं उप परियोजना निदेशक श्री संजय प्रकाश भादू ने भाग लिया।
- माह सितम्बर 2016 में *इम्पैक्ट असेसमेंट स्टडी* के नतीजों पर चर्चा के लिए दिल्ली में आयोजित कार्यशाला में संयुक्त परियोजना निदेशक श्री अक्षय सिंह एवं उप परियोजना निदेशक (वनीकरण) श्री संजय प्रकाश भादू ने हिस्सा लिया।
- माह सितम्बर 2016 में ही आयोजित परियोजना निदेशकों की दिल्ली में बैठक में परियोजना निदेशक श्री आर के गोयल ने JICA द्वारा सिक्किम में आयोजित आठवीं राष्ट्रीय कार्यशाला की मुख्य सिफारिशों पर अपना परिपेक्ष्य प्रस्तुत किया।
- माह सितम्बर 2016 में *"प्रोक्योरमेंट एंड डिस्बर्समेंट अंडर जापानीज ओ डी ए लोन"* विषय पर दिल्ली में आयोजित सेमिनार में उप परियोजना निदेशक (वित्त) एवं वितीय सहायक ने भाग लिया।

परियोजना निदेशक श्री आर के गोयल बैठक को संबोधित करते हुए। मंच पर साथ बैठे हुए हैं जाईका इंडिया के श्री विनीत सरीन।

Financial Progress for the period July 2016 to Sept. 2016

Rs. In Lacs.

S.No.	Package / Budget Head	Expenditure upto FY 2015-16	FY 2016-17				Cummulative Expenditure
			BE	Exp. April'16 to June'16	Exp. July'16 to Sept.'16	Total Expenditure 2016-17	
1	Afforestation	35528.36	12326.31	994.42	4161.95	5156.37	40684.73
2	Agro Forestry Activities	4.99	42.60	0.00	1.44	1.44	6.43
3	Water Conservation Structures	2048.13	3689.55	336.52	320.11	656.63	2704.76
4	Biodiversity Conservation	9048.62	1556.04	276.04	340.94	616.98	9665.60
5	Poverty Alleviation and Livelihood Improvement	361.66	312.00	0.00	6.89	6.89	368.55
6	Capacity Building, Training & Research	167.62	258.12	0.00	5.03	5.03	172.65
7	Community Mobilisation	3819.41	815.30	40.06	202.81	242.87	4062.28
8	Project Management	1571.36	505.70	32.43	77.29	109.72	1681.08
9	Monitoring & Evaluation	148.69	78.00	0.57	1.66	2.23	150.92
10	Contractual Personnel for PMU	742.59	282.00	58.95	51.54	110.49	853.08
	Total	**53441.42**	**19865.62**	**1738.99**	**5169.66**	**6908.65**	**60350.07**
11	Administrative Cost	467.14	134.38	28.04	25.94	53.98	521.12
12	VAT & Import Tax	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
	Total	**467.14**	**134.38**	**28.04**	**25.94**	**53.98**	**521.12**
	Grand Total	**53908.56**	**20000.00**	**1767.03**	**5195.60**	**6962.63**	**60871.19**

संपादक मण्डल:
संरक्षक: **आर.के. गोयल**, परियोजना निदेशक
संपादक: **अक्षय सिंह**, संयुक्त परियोजना निदेशक
सहायक संपादक: **आर .के. खैरवा**, **संजय प्रकाश भादू**
संयोजन: संयोग मिश्र
साज-सज्जा: गिरधारी लाल चौधरी

प्रकाशक : राजस्थान वानिकी एवं जैव विविधता परियोजना (फेज–2), अरावली भवन, झालाना संस्थानिक क्षेत्र, जयपुर (राज.) 302004, फोन : 0141–5199660